International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 2 January – February - 2026

संजीव के कथा साहित्य में कोयलांचल श्रमिकों का चित्रण

महेश शंकर रिटे[1], डॉ. राकेश कुमार सिंह[2]

[1]शोधार्थी, गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो, बठिंडा, पंजाब

[2]शोध निर्देशक, सह आचार्य, गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो, बठिंडा, पंजाब

Corresponding Author – महेश शंकर रिटे

DOI - 10.5281/zenodo.18654560

शोध सार:

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में आमजन की समस्या पर लगभग सभी रचना कारों ने अपनी कलम चलाई पर संजीव ऐसे रचनाकार है जिन्होंने अपनी कथा के केंद्र में साहित्य के अनछुए पहलू कोयला श्रमिकों के संघर्षरत आख्यान को प्रस्तुत किया है। कोयलांचल श्रमिकों की जीवन शैली तथा उनके संघर्ष दुख, पीड़ा, दर्द को समाज से परिचित कराने में संजीव जी ने हिंदी कथा साहित्य में अहम भूमिका निभाई है।

बीज शब्द: ढूह, निजीकरण, आडंबर, धनलोलुप, राष्ट्रीयकरण

विषय वस्तु:

कोयलांचल यानी वह आंचल जहां कोयला पाया जाता है।कोयला एक प्राकृतिक खनिज पदार्थ है। आम चलन में मजदूर इस खदान के रूप में संबोधित करते हैं। खदान पेट भी भरता है और जान भी लेता है। बंगाल,बिहार,उड़ीसा तथा पूर्वी भारत के कई अंचल कोयला खनिज पदार्थ से समृद्ध है। इस अंचल के मजदूरों के लिए यह कोयला ही सोना है।1 संजीव ने कोयलांचल के श्रमिकों की संवेदना और यथार्थ की गहराई तक पहुंचाने का प्रयास किया है। संजीव पूंजीपतियों,दलालों ,सूदखोरो और कोल माफिया के बीच पीसते और कोयला का गर्द फाँकते खदान श्रमिकों के जीवन संघर्ष का यथार्थ चित्रण करते हैं।

संजीव का जन्म सुल्तानपुर के बांगर कला गांव उत्तर प्रदेश में हुआ पर उन्हें रचनात्मक प्रेरणा कोयलांचल के कुल्टी शहर से प्राप्त हुई। कोयलांचल के जीवन यथार्थ को आधार बनाकर उन्होंने कई उपन्यास और कहानियों की कथा भूमि तैयार की। कोयला श्रमिकों यूनियन के दो अलग अलग चेहरे तथा कोयलांचल श्रमिकों का शोषण अत्याचार को उन्होंने नजदीक से जीया और उनकी व्यथा को अपनी कथा साहित्य में प्रस्तुत किया है। कोयला खदान में काम करने वाले श्रमिकों का जीवन अत्यंत त्रासदमय स्थितियों से गुजरता है। कठिन परिश्रम करने के बावजूद भी उन्हें पेट भरने लायक वेतन नहीं मिलता क्योंकि प्राप्त मजदूरी का कुछ हिस्सा पुलिस और गुंडो को कमीशन के रूप में देना पड़ता है। खदानों के मालिक,ठेकेदार,माफिया,पुलिस सभी मिलकर इन श्रमिकों का शोषण करते हैं। संजीव जी इन कोयलांचल श्रमिकों के जीवन शैली का चित्रण अपनी कथा साहित्य में जीवंत रूप से चित्रित करते हैं। 1

'टीस'कहानी का रचनाकाल वर्ष 1978 तथा प्रकाशन वर्ष 1981 है। यह तीस साल का सफरनामा कहानी संग्रह में संग्रहित है। जो दिशा प्रकाशन से प्रकाशित हुआ। इसके बाद संजीव की कथा यात्रा पहला पड़ाव में यह

संग्रहित हुई।टीस कहानी में संथाल कोयलांचल आदिवासी की पीड़ा ,यातना तथा त्रासदी पूर्ण जीवन का चित्रण दिखाई देता है। कोयलांचल श्रमिक भूमिहीन, विस्थापित होने तथा चासा से श्रमिक बनने की समस्या के पीछे कोलियरी के मालिकों का ही हाथ है। 2

"काकड़ डीका कोलियरी के मालिक ने बस्ती के पास ही सुविधा और मुनाफे को ध्यान में रखते हुए एक खुली खदान शुरू कर दी थी, जो बस्ती की छाती पर एक बड़े घाव की तरह दिनों दिन गहरी और बड़ी होती गई थी और जिसकी निकली गई मिट्टी और पत्थरों के ढूह के जबड़े में समाते गए थे संतानों के खेत। कुछ तो इसे अपनी नियति मानकर चासा से मजदूर बनकर वही ठेकेदारी में खटने लगे थे।"3

प्रस्तुत कहानी में यहां पर कोयलांचल के मालिक का श्रमिकों पर किए गए अन्याय का चित्रण दिखाई देता है।कोयलांचल मलिक के अतिक्रमण से वहां के श्रमिक अधिकारी के चंगुल से मुआवजे की आधी, तीखी रकम लेकर धनबाद, रांची की ओर विस्थापित होते हैं। कुछ श्रमिक वहां पर मजदूरी में लग जाते हैं यहां पर कोयला चल के श्रमिकों की विस्थापन की समस्या को दर्शाया गया है। इस गांव के शिबू काका की भी जमीन ले ली जाती है काका इस विस्थापन को स्वीकार नहीं करते बल्कि इस गांव में रहकर अपने पारंपरिक व्यवसाय (सांप पकड़ने का) को अपनी जीविका का आधार बनाकर जीवन यापन करते हैं। कहानी में कोयलांचल श्रमिकों की दैनिक स्थिति को वर्णित किया गया है।पूंजीवादी व्यवस्था में उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण का चित्रण जीवंत रूप से परिलक्षित होता है। कोयलांचल श्रमिकों की हसती,खेलती बस्ती किस तरह से खुली खदान में बदल जाती है और उसके बाद वहां के श्रमिकों को आने वाली समस्याओं का चित्रण तथा उनके विस्थापन की सत्यता का चित्रण प्रस्तुत कहानी में जीवंत रूप से प्रस्तुत किया गया है। पूंजीपति लोग कब तक आदिवासी श्रमिकों की सभ्यता,संस्कृति को निगलते रहेंगे?संजीव इन्हीं सवालों के साथ कहानी को विराम देते हैं।

'कन्फेशन 'कहानी का रचनाकाल वर्ष 1995 तथा प्रकाशन वर्ष 1997 का है। यह ब्लैक होल कहानी संग्रह में संग्रहित है। संजीव की कथा यात्रा दूसरा पड़ाव में भी संग्रहित है।प्रस्तुत कहानी में कोलियरी उद्योग के निजीकरण, राष्ट्रीयकरण तथा वह पनप रहे भ्रष्टाचार तथा श्रमिकों की लड़ाई का यथार्थ चित्रण किया गया है। 4

कहानी के मुख्य पात्र पल्लवी के पिता साहा बाबू कोयलांचल के लोकप्रिय मजदूर नेता थे। श्रमिकों के हक के लिए लड़ने के कारण उनकी हत्या कर दी जाती है। पिता की हत्या के बाद पल्लवी कोयलांचल के श्रमिकों के संघर्ष तथा उनके हक की लड़ाई के लिए कमान संभाल लेती है। अवैध खदान को बंद करके कोयला खदानों का राष्ट्रीयकरण का कार्य सन 1971 ई. के आस पास प्रारंभ हुआ।जन खदानों का राष्ट्रीयकरण तो हुआ पर इनका कोई खास प्रभाव श्रमिकों पर नहीं पड़ा बल्कि श्रमिक और गरीब होते गए वहीं पूंजीपति और अमीर। श्रमिकों का शोषण ,अत्याचार दिन ब दिन और कठोर होता चला गया। 'कन्फेशन' कहानी की नायिका पल्लवी इस राष्ट्रीयकरण के संबंध में कहती है-" सन 71 में कोलियरों का राष्ट्रीयकरण हुआ था तब यह कहा गया था कि कोयला राष्ट्र की संपत्ति है मगर आज वही सरकार उसे निजी मलिकानो को बेच रही है। हम पूछते हैं क्या कोयला अब राष्ट्रीय संपत्ति नहीं रहा या आप लोग भेड़ बकरियां हैं जिसे पैसे लेकर वह किसी को भी बेच सकती है।"5

प्रस्तुत कहानी में यह सवाल उस व्यवस्था की क्रूरता को दर्शाता है जिसमें पहले से ही श्रमिकों का भरपूर शोषण होता आया है। यह सिलसिला आगे भी चलता रहा बस दिखावे के लिए राष्ट्रीयकरण का टैग लटका दिया जाता

है ।कोयला खदानों में काम तो पुरानी परिपाठी से ही चलता है। सरकार की ओर से मिलने वाली राशि को अफसर,ठेकेदार ,पुलिस प्रशासन और पूंजीपति आपस में बांटकर हजम कर जाते हैं। यूनियन नेता पल्लवी पिता के मृत्यु के पश्चात श्रमिकों की लड़ाई में शामिल हो जाती है। वह मजदूरों को बताती है कि राष्ट्रीयकरण की आड़ में इस अघोषित निजीकरण की लड़ाई इन दोनों के विरुद्ध जब तक नहीं होगी तब तक राष्ट्रीयकरण का कोई अर्थ नहीं रह जाता? 6 जबकि राष्ट्रीयकरण को उसके वास्तविक अर्थों में लाकर ही श्रमिकों की दशा से सुधार हो सकता है। पल्लवी भी एक तरह से 'कन्फेशन' करती है और श्रमिकों के लड़ाई में शामिल हो जाती है। राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में नेताओं द्वारा श्रमिकों पर किए गए अन्याय तथा शोषण को जीवंत रूप से प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया गया है।

सावधान! नीचे आग है उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1986 है यह राधा कृष्ण प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ।यह उपन्यास संजीव की डायरी शैली में लिखा गया उपन्यास है। 27 दिसंबर 1975 को चासनाला कोलियरी में पानी में घुस जाने से 375 से 1000 मजदूरों की मृत्यु हो गई थी। यह वही कालखंड है जब देश को आपातकाल की अंधी सुरंग में धकेल दिया गया। इस उपन्यास के केंद्र में मुख्य चासनाला में घटित दुर्घटना ही है लेकिन इसके साथ-साथ तत्कालीन कोयला उद्योग और देश की संक्षिप्त राजनीतिक तस्वीर भी उभरती है।7

प्रस्तुत उपन्यास में झारखंड राज्य के धनबाद जिले में स्थित चंदनपुर गांव की कोयला खदान के अंतर्गत दृश्य तथा कोयला खदान में काम करने वाले श्रमिकों के जीवन का यथार्थ प्रस्तुत किया गया है। बिहार ,पश्चिम बंगाल ,झारखंड से आए हुए मजदूर और अन्य अप्रेंटिसशिप के रूप में खदान में काम करते हैं। इन श्रमिकों को खदान के भीतर काम करते समय चाल गिर जाने मीथेन गैस और अन्य गैस के चलते आग खदान का असुरक्षित क्षेत्र पानी का जमा होने से श्रमिकों की जिंदगी खतरों से गुजरती है। खदान के भीतर तल में अनेक मजदूर काम करते हैं ,ऊपरी तल से पानी का रिसाव शुरू होता है। तब मजदूर मैनेजमेंट को सूचित करते हैं स्वार्थी, धनलोलुप मैनेजमेंट मजदूरों की शिकायतों को नजरअंदाज करते हैं। मैनेजमेंट खदान के नियमों का पालन करने से अचानक ऊपरी तल से वेगवती धारा से पानी खदान में भर जाता है। खदान के भीतर हजारों मजदूर अटक जाते हैं 21 दिन तक खदान में डूब कर मरे हुए लोगों के परिजनों को इंतजार करना पड़ता है। पानी में लाशे फूलने और मालवे में दबने से यह मात्र संख्या बनकर रह जाती है। लाशों की शिनाख़्त ना हो पाने का फायदा उठाकर प्रबंधन हजारों मजदूरों की मौत के रजिस्टर में हेर फेर कर इनकी संख्या 351 बताता है। कंकाल में तब्दील लाशों को मुआवजे का कफन भी नसीब नहीं होता। 8

सावधान !नीचे आग हैं संजीव का उपन्यास कोयलांचल के श्रमिकों की खोती हुई अस्मिता पर प्रश्न खडा करती है। उपन्यास की विषय वस्तु के केंद्र में भीषण त्रासदी है जो आम साधारण श्रमिक के अपोजिट मैनेजमेंट ,माफिया ,सूदखोर,दलाल ,चमचे, गुंडे आदि के दमन चक्र से भयावह हो उठा है। प्रस्तुत उपन्यास में श्रमिकों के जीवन संघर्ष और अकाल मृत्यु को यथार्थ के जिस धरातल पर रची गई है वहां कोयले की गर्द भू -घँसान, जहरीली गैस,धुँआ और आग, जलप्लावन आदि के रूप में मौत प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष तांडव करती है।

उपन्यास की गहराई में झाँकते हुए यह प्रश्न उठता है कि आखिर प्रबंधन और प्रशासन के समक्ष ये मजदूर है क्या एक पालतू पशु जिनकी जिंदगी की परवाह किए बिना कम दाना पानी में एक क्षेत्र विशेष में कैद कर इसे काम करवाना और मना करने पर उनकी बलि चढ़ा देना। 9

सावधान !नीचे आगे उपन्यास में संजीव जी असहाय कोयलांचल क्षेत्र के श्रमिकों को प्रत्यक्ष रखकर देश दुनिया के समस्त पूंजीपति शोषक वर्ग का श्रमिकों के प्रति संवेदनहीनता और निर्ममता की पोल खोलते है। उपन्यास में कोयलांचल श्रमिकों का आक्रोश ,विघ्न, रेस्क्यू, अपवाह आदि प्रसंगो का चित्रण यथार्थ रूप से प्रस्तुत किया गया है।

'धार'उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1990 है। यह उपन्यास राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ।प्रस्तुत उपन्यास कोयला क्षेत्र में श्रमिकों द्वारा दिए गए सहकारिता के प्रयोग की वास्तविक घटना को लेकर लिखा गया है। इसमे बिहार के संथाल परगाना कोयलांचल की खदानों में काम करने वाले श्रमजीवी लोगों की व्यथा को परिभाषित किया है। बांसगंडा इसके केंद्र में है आदिवासी श्रमिक कोयला खदान में काम करते हैं।अवैध खदानों के राष्ट्रीयकरण के संदर्भ में शोषण कर्ता महेंद्र बाबू अपना लाभ ढूंढता है। उपन्यास में अवैध खदानों का राष्ट्रीयकरण करने के नाम पर चलने वाले गोरख धंधा ,दलाली और भ्रष्टाचारियों पूंजीपति व्यवस्था को लेकर सरकार और उच्च अधिकारियों की बातें बस हवा हवाई जुमले ही है।10

प्रस्तुत उपन्यास की नायिका मैना को गांव में स्थापित तेजाब फैक्ट्री का विरोध करने के कारण जेल में भेजा जाता है।जेल से छूटने के बाद मैना का संघर्ष खत्म नहीं होता। जन मोर्चा के अविनाश शर्मा आदि के साथ मिलकर वह फैक्ट्री के विरुद्ध आंदोलन जारी रखती है इसी कारण फैक्ट्री में काम करने के लिए मजदूर तैयार नहीं होता। फैक्ट्री बंद होने के बाद कोयला खनन का अवैध धंधा शुरू हो जाता है। कोयला एक जगह से दूसरी जगह तक पहुंचाने का गेट पास बनवाने के संदर्भ में पुलिस हवलदार कहता है -हर थाने, चेक पोस्ट को संभालते हुए वे कोयला पहुंचा देंगे बनारस द डे यू इंश्योर यू आर सीकयोर। 11

दूसरी ओर संथालो को पुलिस मारती,पीटती और परेशान करती है। गरीब श्रमिकों और आदिवासियों के बीच काम करने वाले अविनाश शर्मा और मंगर के जेल जाने के बाद मैना की मुश्किलें बढ़ जाती है। लेकिन इस वक्त बाप के घर के पास उसे कोयला का खजाना मिल जाता है। मैना बाँसगडा के सारे लोगों को कोयला निकालने और बेचने के धंधे में लगा देती है। महेंद्र बाबू जमीन खरीद लेते हैं विरोध करने पर वह पुलिस द्वारा मैना का ठेला जब्त कर लेते हैं ।इतना ही नहीं उसे डायन भी साबित करने की कोशिश करते हैं। मंगर भी उसका साथ छोड़ देता है फिर भी मैंना झुकती नहीं। हजारों श्रमिक को की सराहना करने वाला कोई प्रस्तुत उपन्यास में नजर नहीं आता है। अंत में उनके श्रम बाल टूट जाता है फिर भी संजीव जी इस मिली हुई पराजय को अंतिम पराजय नहीं मानते ।उपन्यास में मैना का संघर्ष एक लक्षहीन संघर्ष बनकर उभरा है। आदिवासी कोयलांचल श्रमिकों की गरीबी, भुखमरी गंदगी ,अभाव ,धार्मिक आडंबर,आतंक का आदि बातों को संजीव ने कथ्य के रूप में उठाया है।

21वीं सदी की दौर में उन्होंने कोयलांचल श्रमिकों को अपनी कथा तथा उपन्यास की विषय वस्तु बनाया जो समाज से या आधुनिक युग से उपेक्षित रहे हैं। जमीन के ऊपर और जमीन के नीचे कोयलांचल श्रमिकों के साथ पूंजीपतियों ,दलालों ,अफसरो, पुलिस प्रशासन तथा नेताओं के भ्रष्टाचार में लिप्त राष्ट्रीयकरण की गहरी अनुमानों को स्पष्ट रूप से दिखाने की कोशिश संजीव जी के प्रगतिशील विचारों को दर्शाती है।12

कोयलांचल के श्रमिकों की पीड़ा, यातना, संघर्ष, अभाव, समस्या को लेकर संजीव का कथा साहित्य हमें कई स्तरों से परिचित कराता है। उनके साहित्य में सदैव और नवीन तथ्यों, नवीन विचारधारा ,आमजन श्रमिकों की संवेदना का चित्रण मिलता है। संजीव का कथा साहित्य

हमेशा से ही मध्यवर्गीय और श्रमजीवी समाज का आईना बनने में सक्षम है।

' हमरा किस्मत में कोइला छोड़कर का है 'के आख्यान को संजीव ने अपनी रचनाओं में एक दस्तावेज के रूप में स्थापित करने का कार्य किया है ।13संजीव समकालीन कथा साहित्य के उन रचनाकारों में अग्रणीय है जिन्होंने अपनी रचना की जमीन जीता है ।भोगे हुए यथार्थ को इन्होंने अपनी रचना कौशल से जीवंत बनाया है ।उनकी रचनाओं में रेणुऔर प्रेमचंद का प्रभाव स्पष्ट रूप से परीलक्षित होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. यादव शिवकुमार, सहयोग, सेतु प्रकाशन प्रा.लि. सुकांत भवन, बर्नपुर जिला पश्चिमी वर्धमान पृ. क्र.359
2. संजीव टीस, संजीव की कथा यात्रा, पहला पड़ाव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. क्र. 70
3. वही पृ. क्र. 62
4. संजीव, कन्फेशन, संजीव की कथा यात्रा, दूसरा पड़ाव,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृ.क्र. 277
5. वही पृष्ठ क्र.264
6. यादव शिवकुमार, सहयोग, सेतु प्रकाशन प्रा.लि.सुकांत भवन ,बर्नपुर जिला पश्चिमी वर्धमान पृ. क्र. 227
7. वही पृष्ठ क्र.219
8. वही पृष्ठ क्र. 227
9. यादव शिवकुमार, सहयोग, सेतु प्रकाशन प्रा. ली सुकांत भवन, बर्नपुर जिला पश्चिमी वर्धमान, पृ. क्र. 226- 227
10. वही पृ. क्र. 360
11. वही पृ. क्र. 360
12. वही.पृ.क्र.362
13. वही पृ. क्र. 358